अंतरा-शब्दशक्ति

नन्ही दुनिया

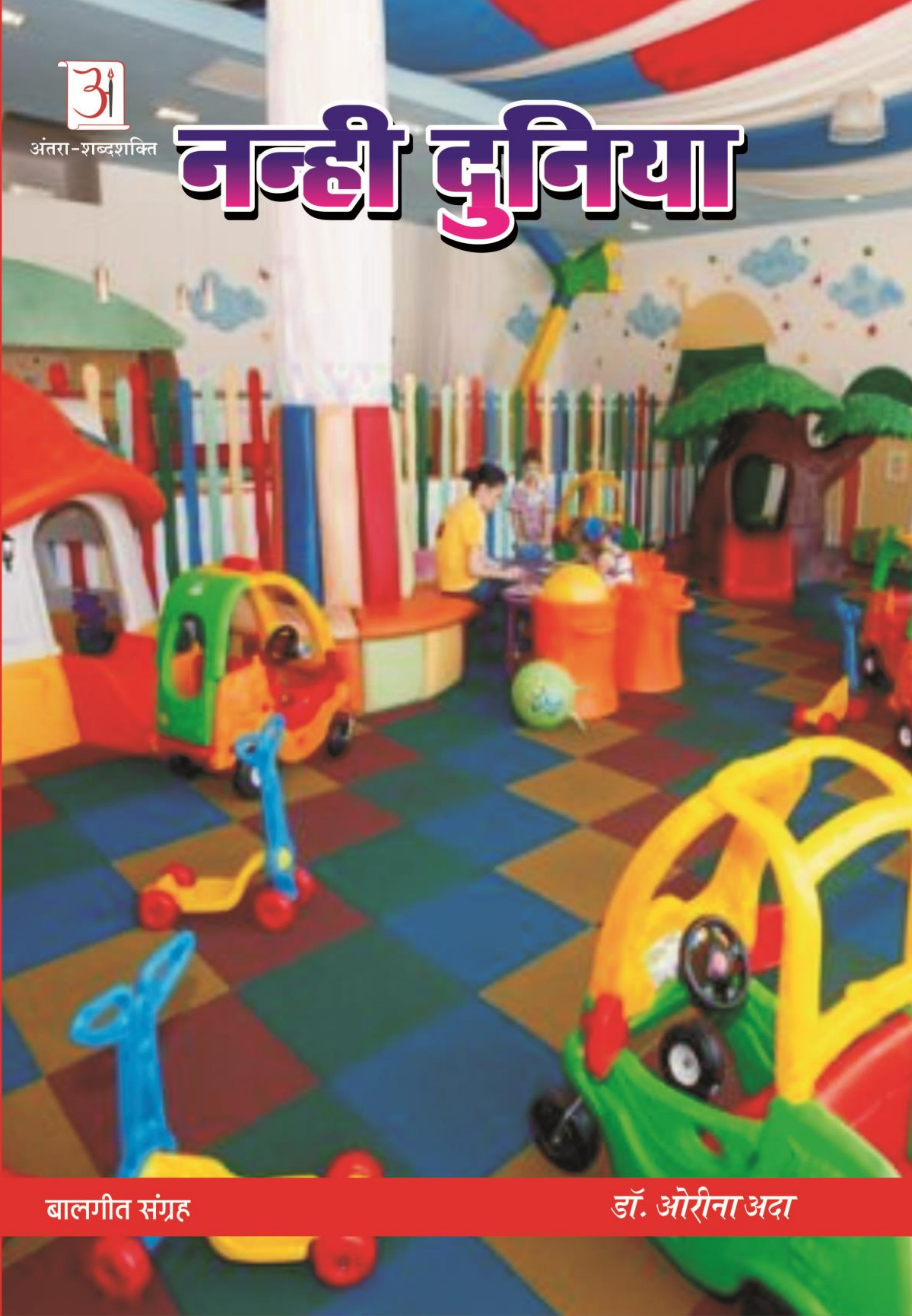

बालगीत संग्रह

डॉ. ओरीना अदा

नन्ही दुनिया

(बाल गीत संग्रह)

डॉ. ओरीना 'अदा'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-13-0

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- डॉ ओरीना 'अदा'
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Nanhi Duniya by Dr Oreena Ada

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

शुभकामनाएँ

प्रस्तुत काव्य ग्रन्थ बालगीत की रचयिता डॉ ओरिना *अदा* एक प्रख्यात कवियित्री हैं। जो अपनी ग़ज़लों और नज्मों के ज़रिए प्रदेश और देश में जानी जाती हैं। इसके लिए उन्हें अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं की विषयों में एम. ए. बी. एड तथा समाज शास्त्र में पी .एच. डी की उपाधि प्राप्त है। लेकिन ऐसा लगता है कि इस पुस्तक में शामिल कविताओं की रचना के समय अपनी सारी विशेषज्ञता और ख्याति को परे रख कर वह स्वयं बालको के स्तर पर उतर आई है। क्योंकि मूलत:वह एक शिक्षिका भी हैं। और शिक्षा और छात्रों के प्रति समर्पित। हैं। इससे पहले भी उन्होंने शिक्षा की धारा में पिछड़े छात्रों के कारण जाने के लिए कई छात्रों पर केस स्टडी भी की है।

छात्रों की इन कविताओं में ज्ञान और मूल्यों का आदर्श। और समन्वय कविताओं की सारी शर्तों को पूरा करता है यहाँ तक कि यह शालेय पाठ्यक्रम में विषय वस्तु को पूरक सामग्री के रुप में भी उपयोगी प्रतीत होता है। बाल साहित्य के क्षेत्र में डाक्टर ओरीना अदा का यह पहला कदम है। मुझे विश्वास है कि उनके बाल काव्य संग्रह का भी अन्य काव्यगृंथों की तरह ही भरपूर स्वागत होगा। तथा बाल्को में भाषा के प्रति रुचि जागृत करने तथा भाषा सीखने में उपयोगी एंव लाभप्रद होगा।

मेरी शुभकामनाएँ ।।।।

डॉ एस. आर बिल्लोरे

पूर्व प्राध्यापक बरकत उल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

समाज शास्त्री, मनोवेज्ञानिक

व्यंग्यकार

मेरी कलम से

याद बचपन की अदा जब कभी आ जाती है,

एक दुनिया मेरी मुट्ठी में सिमट आती है,...।।

छात्रों के शिक्षण का प्रमुख आधार हिंदी भाषा है। ये सभी विषयों के अध्ययन का माध्यम है। भाषा के सभी कौशलों का समुचित विकास होने पर ही बच्चों के मस्तिष्क में स्पष्टता मननशीलता मौलिकता आती है।

यदि बच्चे शुरू से ही समझ और मज़े के साथ पड़े तो बहूत जल्दी पढ़ना सीख जाते हैं। और सफल पाठक बन जाते हैं ।पढ़ने के कौशल का बच्चों के संज्ञानात्मक कौशल विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। बच्चों को जब प्रचूर मात्रा में सामग्री मिलेगी तो उनके पढ़ने की क्षमता विकसित होगी| उनमे रूचि जागृत होगी तथा उनमे जिज्ञासा नया सीखने की ललक पैदा होगी। क्योंकि मैं स्वयं एक शिक्षिका हूँ। बहुत करीब से इन बच्चों को समझा है जाना है। उनके मन उठने वाले सवालों जिज्ञासाओं को उनके स्तर पर जाकर शांत करने की कोशिश की है जवाब दिए है समझाया है। मैंने पाठ्य सामग्री को कविता के रूप में पहले बच्चों को सुनाकर साथ में बच्चों की सहभागिता से साथ में दोहरान से मज़े से बार बार सुनने पढ़ने से याद हो जाती है और बच्चे सरलता से शब्दों का अनुमान लगा लेते हैं। मैंने अपनी कक्षा के छात्रों के साथ ये प्रयोग किया तो मुझे सकारात्मक आश्चर्यजनक परिणाम मिले। बच्चे खेल खेल में भाषा सीख जाते हैं कविता में आये शब्दों को बार दोहराने सेशब्दों का भण्डार उनके पास हो जाता है और वो ख़ुशी से पढ़ने में रूचि लेने लगते हैं और उनमे आत्मविश्वास आ जाता है कि मैं ये लिख सकता हूँ पढ़ सकता हूँ यही कारण है की मैंने अपने बाल गीत संग्रह। *नन्ही दुनिया* में बच्चों के परिवेश रोज़मर्रा के अनुभवों पाठयक्रम से

सम्बन्धित सामग्री को ही बाल कविताओं के रूप में सरल बोलचाल की भाषा में लिखने का प्रयास किया है। जिससे बच्चों का समग्र
विकास किया जा सकता है ।

जब पाठ्य सामग्री रोचक होती है तो छात्र पढ़ने में रूचि लेते हैं और नया सीखने की जिज्ञासा उनमे उत्पन्न होती है। उनमे पढ़ाई के प्रति नीरसता नही रहती ये पढ़ा हुआ जीवनपर्यन्त उनके मस्तिष्क में रहता है और वो आत्मविश्वास से भरे हुए आत्मनिर्भर बन जाते हैं ये मेरी एक छोटी से पहल है अगर इससे बच्चों को लाभ मिलता है तो मेरा लिखना सार्थक होगा जो भी कमी त्रुटी हो तो अवश्य मार्गदर्शन दे आप सभी बुद्धजीवियों के बहुमूल्य सुझावों का स्वागत है इसी आशा के साथ ये बाल गीत संग्रह *नन्ही दुनिया* आपके हाथों में सोप रही हूँ की इस पुस्तक से देश के नोनिहालों का कुछ भला हो सके।

इस संग्रह में शामिल मेरी बाल कविताएँ

1. पानी 7
2. भोजन 8
3. एक दर्जन 9
4. सूरज 10
5. शिक्षक दिवस 12
6. हमारे राष्ट्रीय प्रतीक 13
7. नदियाँ 14

8. आओ पेड़ लगाये 15
9. रंग 16
10. बापू हमारे 18
11. गिनती गीत 19
12. हमको तुम न बच्चे समझो 20
13. आकृतियां 21
14. कोयल 23
15. वर्ष 24
16. स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) 25
17. सप्ताह 26
18. आसमान है पाठशाला 27
19. तिरंगा 28
20. मेरा देश 29
21. वचन 30
22. मेरे वतन 31
23. बादल 32

आपकी दुआओं की तलबगार आपकी

डॉ. ओरीना अब्बासी अदा

पानी

पानी रे पानी तेरी महिमा है निराली

पानी पीकर सबने अपनी ज़िंदगी बचा ली

न है कोई रंग तेरा न ही आकार है
तुझ से ही जीवन की महिमा बिन पानी सब बेकार है
बिन पानी के तो जीवन जिया न जाये

कोई काम बिन पानी के न हो पाये

कुँए बाबड़ी हैंडपंप नदी तालाब से पानी मिलता है

पीने का पानी साफ़ करना पड़ता है
नही तो बीमारियों से फिर लड़ना पड़ता है
उबाल कर छानकरफिटकरी से इसे शुद्ध किया जाये
गंदे पानी से डायरिया पेचिश हो जाये

छोटे छोटे कई बच्चों की इससे जान चली जाये
पानी हम सबको खूब पीना है
लकिन इसको हमें व्यर्थ नही करना है
आओ हम करले प्रण पानी को बचाले
आने बाली पीढ़ी के जीवन को सजादे

आओ मिलकर सबको ये सन्देश सुनादे

पानी है तो जीवन है कल है हमारा
पानी बचाना कर्म ही नही कर्तव्य है हमारा
।

भोजन

भोजन हमारे जीवन का है आधार
संतुलित भोजन से शरीर में नही रहते विकार

कार्बोहाइड्रेट प्रोटीन विटामिन खनिज लवण वसा
भोजन केआवश्यक तत्व है कहलाते

अनाज दाले अंडा दूध और फल जो रोज़ खाते
ये हमारे शरीर को निरोगी है बनाते

भोजन सब स्थानों का अलग तरह का ही होता
हर आयु के लोगो का अलग ही भोजन होता

कभी खट्टा कभी मीठा ठंडा कभी गरमागरम
ये भी तो कितने मज़े मज़े का होता

अगर भोजन नही होता तो जीवन कैसे होता
आओ मिलकर सब एक साथ खाना खाये
पहले हाथ धोले फिर चबा चबा कर खाये।

एक दर्जन

बीस रूपये होते तो एक दर्जन केले लाते
अरे कोई दर्जन का पहले हमें मतलब तो बताते

एक दर्जन का मतलब तो 12 होते
बारह में से एक केला तोते को खिलाते

केला तोता खाता तो मिट्ठू मिट्ठु कहता
तो हम खशी से फूले नही समाते

अब बचे 11 केले ,उसमें से 4 हाथी को खिलाते
हाथी के साथ फिर हम घूमने जाते

रिमशा बोलो कितने केले अब पास रह जाते
सात केले ही मैडम हमारे पास रह जाते

सात केलो में से 2 केले बंदर को खिलाते
बंदर खाकर केले हमको मुँह चिढ़ाते

5 बचे केले और हम हैं दस अब बांटों रेहान
देखे सबको बराबर तुम कैसे बाँट पाते

अक्सा आलिया को एक में सेआधा आधा
अरे हम सब भी तो आधा आधा ही पाते
सब मिलकर ख़ुशी खशी हम केले खाते।

सूरज

दिल्ली मे आज सूरज क्यूँ नहीं निकला.
बड़े सबेरे मुर्गा बोला
चिड़ियों ने अपना मुँह खोला
पर सूरज अब तक गायब है,
कहाँ गया वो आग का गोला
क्या उसने भी कर दी है छुटटी,..

धरती माँ से कर ली कुट्टी
यही सच है तो अब क्या होगा,..
क्या दिन रात में फर्क न होगा
जल्दी उसको फोन लगाओ,
कारण क्या है हमको समझाओ,..
हाथ जोड़ तुमसे हैं विनती
क्या हमने की है कुछ गलती,.

हाँ मै सूरज बोल रहा हूँ...
करतूतों को तोल रहा हूँ
तुमने किया है अत्याचार
अब झेलो कुदरत की मार,..
क्या हवा क्या मिट्टी पानी...
सबसे की है तुमने मनमानी
धुंध की गंदी चादर तानी,..

अब याद आती है नानी
अब भी मेरी वो ही है चाल,..
तुमहे नहीं दिखा
मेरा क्या दोष
अभी वक़्त है संभालो होश.
यंत्रों के बन गये गुलाम
खूब कर रहे उल्टे काम..

धरती का बड़ रहा है ताप
जंगल होते जाते साफ.
दौड रहे विनाश की ओर
मत काटो जीवन की डोर.
अपना जीवन सरल बनाओ
लालच पर अब रोक लगाओ,...।

शिक्षक दिवस

5 सितंबर को शिक्षक दिवस हैं हम मनाते हैं...
डॉ राधाकृष्णन का जन्मदिन है ये शिक्षक बताते हैं..

सन1888 को तमिलनाडु मे जन्म हुआ
भारत के पहले उपराष्ट्रपति से जग मे जाने जाते हैं

आप थे एक आदर्श शिक्षक, राष्ट्रपति, दार्शनिक
इसी लिए भारत रत्न से सम्मानित आप कहे जाते हैं

इतिहास के पन्ने उनकी गाथा हमको सुनाते हैं
17 अप्रेल 1975 को वो दुनिया को छोड गए
याद बहुत हमको आज भी वो आते हैं।

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

राष्ट्रीय प्रतीक हमारे भारत की पहचान हैं..
ये पहचान के आधार भारत की शान है,..
हमारा राष्ट्रीय ध्वज है तिरंगा,
ये भारत की शान है...
हमारा राष्ट्रीय पक्षी मोर है
इसके सर पर सुंदर पंखों कलगी जेसे ताज है,..
हमारा राष्ट्रीय पुष्प कमल है,
ये भारतीय संस्कृति का मांगलिक प्रतीक है..
हमारा राष्ट्रीय पेड़ बरगद है
क्यूंकि ये माना जाता अनश्वर है,..
हमारा राष्ट्रीय गान जन गण मन है,
रबीन्द्रनाथ टैगोर रचयिता, 52 सेकंड में है गाया जाता,...
राष्ट्रीय नदी हमारी गंगा है जो
हिमालय से निकली भारत की सबसे लंबी नदी,..
हमारा राष्ट्रीय पशु वाघ है
इसकी फुर्ती, ताक़त ही इसकी शान है,..
हमारा राष्ट्रीय फल आम है
ये फलों का राजा कह लाता,..
हमारा राष्ट्रीय खेल है हाकी,
ध्यान चंद हाकी के जादूगर कहलाते,..
हमारी राष्ट्रीय मुद्रा रुपया है,
ये सब हमारे देश की पहचान के आधार है,
हमारे देश की पहचान है,.. ।

नदियाँ

नदियाँ हैं हमारी जीवन धारा
इनसे ही चलता जीवन सारा

नदियों से ही फसले जीवित हैं
फसलों से जीवित किसान हैं

नदियों मे स्नान कर होती
शुद्ध आत्मा और जान है

स्वच्छ धारा कल कल बहती बहती
आगे बढ़ने का संदेश हैँ देती

बाधाओं को दूर हटाकर बह जाती है
जाके समुन्दर मे खो जाती है

गंगा जमुना सरस्वती पर,
हमको गर्व है अभिमान है,

अपना सब कुछ अर्पण करके
देती हमको जीवन दान है।

आओ पेड़ लगाये

धरती को स्वर्ग बनाये
ये हरी भरी वादियां
फूलों से लदी डालियाँ
ये शोर मचाता झरना
ये मोन बहती नदियाँ

सदा रहे मंज़र यही
इसमे ना हो कोई कमी
न बड़े प्रथ्वी का ताप
न हो वनस्पति का नाश
न हो भूमि बंजर कही

दुनिया रहे सदा हरी भरी
पेड़ लगाना हो कर्म हमारा
पानी बचाना हो धर्म हमारा
प्रश्न बस रहे सदा यही
कि ये स्वर्ग है या ज़मीन ।

रंग

लाल लाल टमाटर होता
जीतू के हैं गाल लाल
और बोलो मुन्नू क्या क्या होता लाल,,,,,,

पीला पीला पपीता होता
रेहान तुम बताओ बेटा
और क्या होता पीला,,,,,

जामुन जामुनी रंग की होती
बेगन होता है बेगनी
बोलो अंक्सा और क्या जामुनी होता,,,,,

नीली नीली छतरी ज़ोया की
नीली नीली स्हाई पेन में
अब बोलो रिम्शा रानी और क्या नीला होता,,,,

नारंगी रंग का है संतरा
जो रस से भरा होता
आलिया कुछ तुम भी बोलो क्या और नारंगी होता ,,,,

काले रंग का शयामपट्ट है
दानिश की आँखे हैं काली काली
तय्यब बोलो और क्या है काला,,,,,,

सफ़ेद रंग के फूल खिले हैं
नंदनी के रिबन भी सफ़ेद हैं
विकास बोलो। और क्या सफ़ेद है

रंगो से संसार सजा है
रंगो से रंगीन है दुनिया
आओ पहचानो रंगो को
इरम निदा ज़ेनव और मुनिया।

बापू हमारे

बापू हमारे सा रे जग से निराले

बापू थे सच में कितने मे प्यारे.

पोरबंदर गुजरात मे 2 अक्टूबर 1869

को जन्म हुआ था उनका...

जिसको हम गाँधी जयंती दिवस के नाम से है

मनाते कितने प्यारे थे बापू हमारे ...

पिता थे जिनके कर्म चंद गाँधी माँ पुतली बाई

पत्नी कस्तूरबा गांधी, सत्य अहिंसा पर थे वो चलने वाले ..

माँ को दिये वचनों को निभाने वाले

कितने प्यारे थे बापू हमारे .

विदेशी का बहिष्कार कर स्व देशी अपनाने वाले

खादी ही सदा पहनी घड़ी कमर में लटकाए..

गोल ऐनक वो लगाते थे, कितने प्यारे थे बापू हमारे.

स्वतंत्रता की अलख जगाकर देशप्रेम जगाने. वाले..

राष्ट्रपिता थे वो कहलाते .भेद भाव मिटाने वाले

कितने प्यारे थे बापू हमारे

कर के आसहयोग आंदोलन

भारत को अंग्रेज़ों से स्वतंत्र कराने वाले

कितने प्यारे थे बापू हमारे हमारे.

30 जनवरी 1948. को हो गए शहीद

पुण्यतिथि उनकी शहीद दिवस के रूप में है हम मनाते

कितने प्यारे थे बापू हमारे..।

गिनती गीत

एक एक एक ईश्वर है सभी का एक
दो दो दो ईश्वर लगाओ सब लो

तीन तीन तीन गांधी जी के बंदर तीन
चार चार चार चतुर्भुज की भुजाये चार

पांच पाँच पांच पंचभुज में भुजाये पांच
छै छै छै अब सोनू सच्ची सच्ची कह

सात सात सात सप्ताह में होते दिन सात
आठ आठ आठ आओ मिलके पढ़ले पाठ

नो नो नो आओ खेले सब खो
दस दस दस दोनों हाथ में ऊँगलियां दस।

हमको तुम न बच्चे समझो

हमको तुम न बच्चे समझो
हम ही देश के नोनिहाल हैं

हम ही से तो दुनिया चलती है
हम ही से तो ये जग निहाल है

हम ही से तो आँगन हँसता है
हम ही से तो झूठ दूर भगता है

हमसे दीवारे बाते करती है
हम ही से घर में धमाल है

कहने को हैं हम नन्हे मुन्ने
लकिन हम बहुत कमाल है

खोजवीन में हम रहते हैं
मन में बहुत सवाल है।

आकृतियां

(वर्ग)

वर्ग में चार भुजाएं होती
और चारों ही देखो बराबर भी होती
देखो चार ही कोने भी होते...
कितना प्यारा मैं चोकोर बन जाता
हर बच्चे के मन को हूँ मैं भाता।

(आयात)

आमने सामने की भुजाएं मेरी बराबर होती
दो लंबी होती हैं दो हैं छोटी होती
स्कूल के सब दरवाजे आयताकार
खिड़की देखो कमरा देखो या खेल का मैदान
मेरा ब्लैकबोर्ड भी है देखो आयताकार
कितना सुंदर है देखो सोनू मेरा ये आकार।

(त्रिभुज)

दो खड़ी रेखा और एक आड़ी रेखा खींचो.
देखो देखो बन गया हूँ मैं त्रिभुज
तीन भुजाएं मेरी तीन है कोने होते
देखो समोसा या फिर   परांठा ये भी तिकोने होते
इसीलिए लोग मुझे त्रिभुज है कहते।

(वृत)

चंदा गोल सूरज गोल पृथ्वी गोल
मम्मी बनाती है रोटी गोल गोल
मैडम जी आपकी बिंदी भी है देखो गोल
आज खाने मे पूड़ी आई वो भी है गोल गोल
राजू मेरी फ़ुटबॉल भी कितनी गोल
नाम व्रत का गोल भी होता है
मेरे राजू प्यारे गोल मटोल।

कोयल

कोयल भले तुम रंग में काली काली हो
पर दिल को बहुत लुभाती हो
पेड़ों की डाली पे बैठ कर तुम
मीठे मीठे गीत सबको सुनाती हो
मीठा बोलो जब भी बोलो
हमको यह सीख सिखाती हो
कोयल रानी सच सच कह
दो
मीठी तान तुम किसको सुनाती हो
सूखी हुई डाली पे बेठ क्या
तुम
बरखा रानी को प्यार से बुलाती हो
हम भी मन की बात बतादे तुमको
कोयल रानी तुम हमको बहुत ही भाती हो।

वर्ष

एक वर्ष मे 365 दिन होते हैं
लीप वर्ष में हो जाते हैं 366

एक वर्ष में होते हैं 12 महीने
जनबरी फ़रवरी मार्च अप्रेल मई जून
जुलाई अगस्त सितंबर अक्टूबर नम्बर और दिसम्बर

इनमे 7 माह होते 31 दिन के 4 बाकी 30
छोटा सबसे फरवरी होता है 28 या 29।

स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त)

मिली हमे है आज़ादी 15 अगस्त को
आओ मिलकरखुशी. मनाए 15 अगस्त को

देश था पहले गुलाम अंग्रेज़ों का
स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने देकर के बलिदान
किया भारत को आज़ाद 15 अगस्त को..

देश के सेनानी गए जेल खेली खून की होली
हमे तब मिली आज़ादी 15 अगस्त को,..

चन्द्रशेखर आजाद भगतसिंह बिस्मिल्ल और अशफाक
जब चढ़ के फांसी पर हो गए कुर्बान

देश हुआ आज़ाद 1947, को
लाल किले पर फहराया तिरंगा 15 अगस्त को,.. ।

सप्ताह

एक सप्ताह मे दिन सात
सोमवार, मंगलवार बुधवार गुरुवार
शुक्रवार शनिवार रविवार

एक दिन मे होते 24 घंटे
दिन रात मिलकर पूरा होता 1 दिन

एक घंटे में होते 60 मिनट
एक मिनट में होते 60 सेकंड

टिक टिक घड़ी चलती है
बस ऐसे ही जिंदगी चलती है

समय के साथ जो चलते हैं
वो जीवन में आगे बढ़ते हैं,.. ।

आसमान है पाठशाला

आसमान है पाठशाला
सितारे तारे इनमे पढ़ते
रात मे ही ये खुलती है
दिन में तो यह सब सो जाते

चंदा मामा गुरुजी है इनके
जो रात को अपने प्रकाश के साथ कक्षा में आ जाते
इनकी कक्षा बड़ी व्यव्स्थित
ये कभी भी न शोर मचाते

आपस में नहीं झगड़ा करते
एक साथ रह कर खूब हँसते है..
खेल खेल में खूब पढ़ते हैं
आसमान है पाठशाला।

तिरंगा

मेरे वतन की शान तिरंगा
सरहद की पहचान तिरंगा

इसकी खातिर जीना मरना
हम सब की है जान तिरंगा

देश की रक्षा मिलके करेंगे
करता है आव्हान तिरंगा

मर कर भी न होने देंगे
तेरा हम अपमान तिरंगा

सर न कभी तू झुकने देना
तुम पर है अभिमान तिरंगा

हमको देकर अपना साया
करता है अहसान तिरंगा

मेरे वतन की शान तिरंगा
सरहद की पहचान तिरंगा।

मेरा देश

मेरा देश है कितना प्यारा प्यारा
सारे जग से है ये न्यारा न्यारा

इसमें भांति भांति के फूल खिले हैं
जिनसे महका है ये जग सारा

गंगा जमुना कृष्णा और कावेरी
की बहती है यहाँ कल कल धारा

हरी भरी वादियाँ इतना सुंदर ताज हमारा
हिमालय पर्वत है पहरेदार हमारा।
.

वचन

वचन हमेशा मीठे बोल
जब भी बोल तोल के बोल,..

रिश्ते होते बहुत अनमोल
पैसो से. न तु इनको तोल...

माता पिता की सेवा करले
ये है पूंजी बहुत अनमोल...

पास.रहो तो किट किट होती .
दूर के ही होते सुहाने ढोल...

कडवी बातों से दिलो मे..
नफ़रत को न रिश्तो में घोल...

मन से सब द्वेष हटाके
हँसले हँसले तू दिल खोल,..।

मेरे वतन

मेरे वतन से अच्छा कोई वतन नही है
मिट्टी की मीठी सुगंध कही ऐसी ठंडी पवन नही है,..

हर एक मज़हब के देखो कैसे ये गुल खिले हैं
ऐसा न कोई गुलशन ऐसा चमन नही है
क़ुरआन की आयते वेदों की ये ऋचाएं

नही ऐसी अजान की सदाये
कही भी ऐसा कोई भजन नही है
मेरे वतन सेअच्छा कोई वतन नहीं है,..

नदियों में इसकी कल कल झरनों में
इसकी हलचल कही पहाड़ है ऊंचे इसमे
झीलों से कभी भरता मन नहीं है

रहते सभी हैं यहाँ. हम आपस में मिलके
हम सबके बीच कोई अनबन नहीं है
मेरे वतन से अच्छा कोई वतन नही है,. ।

बादल

गढ़ गढ गढ़ गढ़ बादल गरजे
चम चम चम चम बिजली चमकी

सर सर सर सर हवा चली है
टिम टिम टिम टिम तारे चमके
छम छम छम छम बरखा बरसे
चम चम चम चम जुगनू चमके

थर थर थर थर मुनिया रही है
पानी में भीगी अब हाँप रही है
नाव कागज़ की कैसे तैर रही है
हवा के संग ये तो खेल रही है

आशु छाता लेकर घर से निकले
अनन्नु सरपट दौड़ रहा है
पैर फिसला गिर गया धम से
मैं भी नाचूं आज ख़ुशी से,..।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. ओरीना अब्बासी (अदा)

पति - श्री मज़हर हसन

शिक्षा - एम.ए. (अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, राजनीति शास्त्र, अंग्रेजी, एम.एस.डब्लू (सोशल वर्क)), बी.एड., पी.एच.डी.
उर्दू अदीब 'माहिर' कामिल 'मोअल्लिम' (ए.एम.यू.)
सी.आई.जी. सर्टिफिकेट इन गाईडेंस एवं काउंसिलिंग, डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन, इंग्लिश लेंग्वेज डिप्लोमा इ.एल.टी.ई., जी0के0 एण्ड मॉरल एजुकेशन डिप्लोमा, उर्दू लेंग्वेज डिप्लोमा

कार्यक्षेत्र - 'शिक्षिका', ब्यूटीशियन, शायरा

प्रकाशन - 1. अदा ए सुखन (एकल संग्रह), 2. आईना ए अदा (एकल संग्रह),
3. हम परिंदों से प्यार करते हैं (सांझा संग्रह), 4. साहित्य सागर (सांझा संग्रह)
5. अदब ए सुखन (सांझा संग्रह), 6. शब्दों के वंशज (सांझा संग्रह)
7. माँ मेरी जन्नत (एकल संग्रह),

सम्मान - 1. सृजन कामना पुरस्कार, 2. शायर ए वतन, 3. महेश जोशी गीतकार सम्मान
4. हजरत गाजी गाजीपुर सम्मान, 5. कला निधि शिक्षक सम्मान
6. उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान, 7. सरस्वती साहित्य प्रतिभा सम्मान, 8. मातृशक्ति सम्मान
9. प्रेरणा सम्मान, 10. सुभद्रा कुमार चौहान सम्मान, 11. ग्लोवल आइकॉन अवार्ड
12. ज़ोहरा ए सुख़न सम्मान, 13. वुमन आवाज़ अवार्ड, 14. नेशनल टीचर अवार्ड
15. महादेवी वर्मा मेमोरियल अवार्ड

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करतें हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-13-0

मूल्य- 55/-